प्रस्तुति– डॉ० साक्षी शालिनी
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी)
धर्म समाज संस्कृत महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर
(कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा)
कक्षा– उपशास्त्री द्वितीय खंड (हिन्दी) के विद्यार्थियों के लिए मूल पाठ प्रेषित किया जा रहा है।

प्यारे नन्हें बेटे को

प्यारे नन्हें बेटे को
कंधे पर बैठा
'मैं दादा से बड़ा हो गया'
सुनना यह ।

प्यारी बिटिया से पूछूँगा–
'बतलाओ आसपास
कहाँ-कहाँ लोहा है'
'चिमटा, करकुल, सिगड़ी
समसी, दरवाजे की साँकल, कब्जे
खीला दरवाजे में धँसा हुआ'
वह बोलेगी झटपट ।

रुककर वह फिर याद करेगी
'एक तार लोहे का लंबा
लकड़ी के दो खंबों पर
तना बँधा हुआ बाहर
सूख रही जिस पर
भय्या की गीली चड्डी !
फिर–एक सैफ्टी पिन, साइकिल पूरी ।

आसपास वह ध्यान करेगी
सोचेगी

दुबली पतली पर
हरकत में तेजी कि
कितनी जल्दी
जान जाए वह
आसपास कहाँ-कहाँ लोहा है ।

मै याद दिलाऊँगा
जैसे सिखलाऊँगा बिटिया को
'फावड़ा, कुदाली,
टँगिया, बसुला, खुरपी
पास खड़ी बैलगाड़ी के
चक्के का पट्टा,
बैलों के गले में
काँसे की घंटी के अंदर
लोहे की गोली ।'

पत्नी याद दिलाएगी
जैसे समझाएगी बिटिया को
'बाल्टी, सामने कुएँ में लगी लोहे की घिर्री,
छत्ते की काड़ी-डंडी और घमेला,
हँसिया, चाकू और
भिलाई बलाडिला
जगह जगह लोहे के टीले ।'

इसी तरह
घर भर मिलकर
धीरे धीरे सोच सोचकर
एक साथ ढूँढ़ेंगे
कहाँ-कहाँ लोहा है–
इस घटना से
उस घटना तक
कि हर वो आदमी
जो मेहनतकश
लोहा है